REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 13 | ISSUE - 11 | AUGUST - 2024

मध्यकालीन विद्रोही संत नारियाँ

डॉ. सुवर्णा नरसु कांबळे
सहयोगी प्राध्यापक ,
कला व वाणिज्य महाविद्यालय सातारा।

शोध सारांश :

भारतीय समाज में सदियों से नारी पशुवत जीवन जिती आ रही है। आधुनिक काल में शिक्षा प्राप्त की नारी अपने अधिकार के प्रती सजग होकर पुरुष समान जीवन जीने का प्रयत्न कर रही है। परंतु ,आज भी उसका पुरुष समान जीवनाधिकार प्राप्ति का संघर्ष जारी है। भारतीय स्त्री प्राचीन काल से पशुवत जीवन जी रही थी ,उसमें अस्मिता जागृत करने का काम मध्यकालीन संत नारियों ने किया। परिणाम स्वरूप ;भारतीय नारी का मानवाधिकार प्राप्ति का संघर्ष प्रारंभ हुआ दिखाई देता है। आज भी अपने अधिकार के लिये संघर्ष करने -वाली भारतीय नारी को मध्यकालीन विद्रोही संत नारियाँ आण्डाल,अक्कमहादेवी और मीराबाई के विचार प्रेरणा स्थली है।

बीज शब्द : स्वर्णकाल , भक्ति , अलवार ,आध्यात्मिक ,बंधन , ठगिणी, अभिमत, कुलनासी इत्यादी।

हिंदी साहित्य के स्वर्णकाल भक्ती काल का भारतीय समाज में सिर्फ भक्तिकाल के रूप मे मूल्यांकन करना गलत है। क्योंकी, यह काल भक्ति के साथ साथ धर्म ,वर्ण, जाति ,कुल और लिंग कि परिसीमाओं को लांघकर सम्पूर्ण भारतीय समाज में भक्ति के साथ - साथ मानवतावादी धर्म की स्थापना करने वाला काल रहा है। क्योकि, वर्ण व्यवस्था और परकियों के आक्रमणों ग्रस्त समाज में सत्ता और व्यवस्था के विरुद्ध का स्वर ध्वनित हुआ। सिर्फ मोक्ष प्राप्ति भक्ति का उद्देश न रहकर सामाजिक जीवन में स्थित वर्ण ,जाती और लिंग के प्रति किये गये शोषण, अन्याय-अत्याचार के प्रति विरोध प्रारंभ होकर तात्कालीन सगुण और निर्गुण संतो के वाणी मे दृष्टिगोचर होता है। सामाजिक, सांस्कृतिक जीवनमूल्य और आदर्श की प्रतिष्ठापना इस काल में प्रारंभ हुई नजर आती है।

मध्यकालीन भक्ती आंदोलन में दक्षिण भारत मे छठी शताब्दी से लेकर नवीं शताब्दी तक अलवार भक्तों का योगदान विशेष उल्लेखनीय रहा है। अलवर भक्तों कि विशेषता यह रही है कि इन्होने प्रथम दलित और स्त्रियों को भक्ति का अधिकार प्रदान करते हुए सामाजिक क्रांति का स्वर फूँका है। बारह अलवार भक्तों में (समय काल सन ७१५ या ७१६) 'आण्डाल' नाम कि नारी ने सामाजिक और अध्यात्मिक क्षेत्र में नारी अधिकार की मांग थी । श्री विलापुर के विष्णुचित्त को तुलसी की छाया में शिशुवास्था में प्राप्त पोष्यपुत्री आण्डाल एक विद्रोही नारी रही है। विष्णु भक्त रही आण्डाल के जन्म को लेकर अनेक क्विदंतियाँ है। 'तिरुप्पावै' पदों मे रंगनाथन के प्रति अपनी प्रेम भावना व्यक्त करनेवाली आण्डाल में तार्किकता और निडरता स्पष्ट झलकती है। आण्डाल ने सामाजिक बंधन को नकार

कर अपना प्रेम पाने के लिए एक विद्रोही नारी के रूप मे प्रस्तुत होकर नारी के स्वतंत्र व्यक्तीत्व और अधिकार की आध्यात्मिक क्षेत्र में नारी को स्थापित किया है। नारी पुरुष के वासनापूर्ती का साधन मात्र न होकर स्वतंत्र रूप से जीवन जीने का अध्यात्मिक मार्ग अपनाने वाली आण्डाल प्रथम नारी है। आण्डाल अपनी सखी से कहती है -

"नमक्कै परे तरुवान ।" 1 अर्थात, नारायण ही हमारे अभिमत देने की क्षमता रखते है। अभिमत याने अपना अधिकार। भक्ती काल के समय में नारी अधिकार के बारे में विचार रखने वाली आण्डाल स्वतंत्र बुद्धी की 'स्वतंत्र नारी' के रूप मे प्रस्तुत हुई है।

बारहवीं शती में कर्नाटक के शिवमोगा जिले के उडुतडि में जन्म हुई 'अक्कमहादेवी' का नाम भी विद्रोही संत नारी के रूप में महत्वपूर्ण है। कर्नाटक के मध्यकालीन बारहवीं शती के महान दार्शनिक राजनीति और क्रांतिकारी समाजसुधारक संत बसवेश्वर ने अंधकार में चले गये समाज को ' अनुभव मंडप' की स्थापना कर 'वचन साहित्य' के माध्यम से सर्वजन समानता, एकदेवत्व, नीति निष्ठता का संदेश देकर सामाजिक एकता के लिए महनीय कार्य किया। उन्हीं के सानिध्य मे बत्तीस शिवेशरणियों में से एक 'अक्कमहादेवी' है। जिन्होंने सामाजिक रूढियों को नकारकर विषयासक्त पति जैन राजा 'कौशिक' का त्यागकर भक्तिमार्ग अपनाया। अपने अधिकार के प्रति सजग होकर ईश्वर प्राप्ति का मार्ग अपनानेवाली अण्डाल सामाजिक व्यवस्था का विरोध करती है-

"भैंस की चिन्ता चर्मकार की चिन्ता
धर्मी की चिन्ता, कर्मी की चिन्ता,
होती है अलग- अलग..
मुझे मेरी चिन्ता, उनको काम की चिन्ता
जाओ छोड़ो। छाडो मेरा दामन मोही
मुझे मेरे च मल्लिकार्जुन प्रभु
अपनायेंगे या नहीं
इस की हैं चिन्ता। "2

विषयासक्त पति को नकारनेवाली, गुरूदर्शन को चलते समय पती ने वस्त्र छुपाये रखने पर अपने केशाम्बर से अपने शरीर ढककर गुरुदर्शन करनेवाली अक्कमहादेवी एक निडर नारी हे रूप मे नजर आती है। पुरुषसमान समाज के वर्चस्ववाद को नकार कर गुरु बसवेश्वर के एकेश्वरवाद का स्वीकार करते हुए कहती है –

हाय रे हाय! देखा तो संसार का नाटक !
तात-पिता के वेश में सबसे पहले आया !
मुंछों पर ताव-देकर बीचों बीच आया !
बुढ़ापा बनकर अंन्त में आया !
लेकिन तुम्हारी दृष्टि पडते ही
इस नाटक पर पर्दा पड़ गया।
हे 'चन्नमलिकार्जुन मैंने यह जान लिया।"3

स्त्री के जन्म से लकर मृत्यू तक पिता, भाई, पति और बेटे के रूप में वर्चस्व रखनेवाली व्यवस्था का विरोध कर चन्नमलिकार्जुन को अपनानेवाली अक्कमहादेवी स्त्री – पुरुष समानता के प्रति जागृत होकर पुरुष वर्चस्वाद को नकारने वाली क्रांतिकारी विद्रोही संत है।

मध्यकालीन भारतीय समाज के प्रथम समाज सुधारक कहे जानेवाले संत कबीर ने नारी स्वतंत्रता को नकारकर उसे माया, ठगिणी, संर्पिणी, झूठी और दुर्बुद्धि और अमंगलकारी माना था। नारी को केवल भोग वस्तू के रूप में देखा। ऐसे समय मे संत 'मीराबाई' अकेली ऐसी नारी है, जिन्होंने सामाजिक रुढियों और पारिवारिक मान्यताओं को त्यागकर नारी स्वतंत्रता का स्वर बुलंद किया। राज परिवार की बहु होने पर भी तत्कालीन धर्म एवं समाज व्यवस्था के विरुद्ध जाकर परंपरागत व्यवस्था के विरुद्ध खडे होने एक अद्भुत साहस का परिचय देती है। राज परिवार के नियमों कि परवाह न करते हुए नाचते - गाते ईश्वर की भक्ति करनेवाली मीरा कुलनासी ठहराई।

"पग घुंघरू बांध मीरा नाची रे ,
लोग कहूयाँ मीरा भई बाबरी, सासू कहूयाँ कुलनासी रे। " **4**

तत्कालिन समाज व्यवस्था एवं पारिवारिक नैतिक बंधन को तोडने वाली मीरा पर देवर महाराणा राणा द्वारा विषप्रयोग किया गया। तब मीरा कहती हैं –

" रानाजी थाने जहर दियो मैं जानी।
जैसे कंचन दहल आगिन में निकसत बारहवानी।" **5**

सामाजिक बंधनों को नकारकर चलनेवाली मीरा के आत्मविश्वासु, नीडर, विद्रोही रूप के बारे में सूरज पालीवाल कहते है - "मीरा पूरी सामंती व्यवस्था के कुच और नारी विरोधी समाज के सामने तनकर खड़ी है। वह न किसी से डरती है और न किसी की चिन्ता करती है। उसने अपनी स्वतंत्रता का मार्ग स्वयं प्रशस्त किया है। उस मार्ग पर वह झूमते- गाते गर्वोन्तत होकर चल रही है।"**6** नारी विरोधी समाज के सामने डटकर खडी होनेवाली विद्रोही संत मीरा ने भारतीय समाज ने पालतू वस्तू समानमानी गई नारी के आत्मा मे 'स्व' स्वर फुँककर उसके आत्मसन्मान को जागृत किया। इसलिये संत मीराबाई का स्थान विद्रोही नारी संत मे शीर्षस्थ रहेगा। क्योंकि , उन्होने भारतीय नारी को नीडर बनाकर अपनी बात समाज के सामने खुलेआम कहने का धाडस प्रदान किया। इसलिये भारतीय नारी के निडरता की प्रेरणा स्थली के रूप मीरा का नाम प्रथम स्थान पर रहेगा।

निष्कर्ष :

स्त्रीमुक्ति की दृष्टि से मध्यकालीन विद्रोही संत नारियों की वाणी क्रांतिकारी है। क्योंकि ,तत्कालीन समाजव्यवस्था के विरुद्ध संघर्ष खडा कर अपने अधिकार के लिये लडनेवाली अण्डाल,अक्कमहादेवी और मिराबाई ने स्त्री शोषण, अन्याय- अत्याचार के विरुद्ध भक्ती के माध्यम से आवाज उठाकर तत्कालीन समाज को स्त्री भी एक एक मनुष्य होने का एहसास करा दिया। उसके अधिकार के प्रति समाज मन को जागृत किया। इसलिये अण्डाल,अक्कमहादेवी और मिराबाई इन संत नारियों का जीवन नारी संघर्ष की प्रामाणिक गुंज है। जिसमें प्रेम, भक्ती और नारी अस्मिता की पुकार एक साथ सुनाई देती है।

संदर्भसूची:

1. डॉ. के.एम. मालती , "स्त्री विमर्श: भारतीय परिक्षेत्र " वाणी प्रकाशन, दरियागंज ,नई दिल्ली-**11002** प्र. सं **2010**,पृ . 151.
2. गुंडूराव नंदिनी, "अक्कमहादेवी के वचन" **(**अनुवाद**),** कर्नाटक विश्वविद्यालय, प्र. सं- **1998** ,पृ **-21**.
3. वही - पृ **25**.
4. सिंह कुंवरपाल**,** "भक्ती आंदोलन इतिहास और संस्कृती", वाणी प्रकाशन ,दरियागंज ,नई दिल्ली- प्र. सं **1995** प्र-**240**
5. वही – पृ **240**.
6. वही – पृ **241**.